विश्वास

विश्वास: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. विश्वास का परिचय।
II. विश्वास पर एक बाइबल अध्ययन।

कक्षा #२:

II. विश्वास पर एक बाइबल अध्ययन (जारी।)

कक्षा #३:

III. क्या, क्यों, कहां, कब, कैसे और विश्वास के कौन।

कक्षा #४:

IV. उद्धार और शुद्धिकरण से जुड़ा विश्वास।

कक्षा #५:

IV. उद्धार और शुद्धिकरण से जुड़ा विश्वास (ज़ारी।)
V. विश्वास के हमारे अध्ययन का निष्कर्ष; परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

विश्वासः परीक्षा

सम्भावित २० सूत्रीय प्रश्न

१) विश्वास के पांच फलों की सूची बनाएं तथा उसका वर्णन करें (पृष्ठ ४८, ४९)।

२) विश्वास क्या है? (पृष्ठ ५०-५२)।

३) विश्वास के ४ भिन्न पहलुओं को सूचीबद्ध और उनका वर्णन करें (पृष्ठ ५७)।

सम्भावित १० सूत्रीय प्रश्न

१) ४ प्रकार के विश्वास लिखें (पृष्ठ ४७)।

२) विश्वास के ३ स्रोतों को लिखें (पृष्ठ ४८)।

३) २ बिन्दु लिखें जो विश्वास के महत्व को दिखाते हों (पृष्ठ ४९)।

४) प्रश्न का उत्तर दें: "हमारा विश्वास कहां है?" (पृष्ठ ५३)।

५) असीमित विश्वास को दर्शाने के लिए यूहन्ना ११:३९-४४ का इस्तेमाल करें (पृष्ठ ५४)।

६) विश्वास को मजबूत बनाने के लिए २ तरीके बताएं (पृष्ठ ५६)।

विश्वास

I. विश्वास का परिचय।

टिप्पणियाँ –

लेखक का उदारहण:

एक व्यक्ति पहाड़ पर चढ़ रहा था। वह गिर पड़ा। उसने एक पेड़ की डाली को पकड़ लिया। वह झपट से उस पेड़ की डाल पर लटक गया और मदद के लिए चिल्लाने लगा।

वार्तालापः

आदमी: क्या यहां कोई है?

आवाज़ः हां...मैं यहां पर हूं।

आदमीः कौन हैं वहां? आवाज़ः मैं प्रभु हूँ।

आदमीः प्रभु... मेरी मदद करें!

आवाज़ः क्या तुम मुझ पर विश्वास करते हो?

आदमीः हां प्रभु। मैं आप पर पूरी तरह से भरोसा करता हूं।

आवाज़ः बहुत अच्छी बात है। चलो अब... उस डाली को छोड़ दो।

आदमी: क्या?

आवाज़ः हां, मैं ने कहाः उस डाली को छोड़ दो।

आदमीः (बहुत देर सोचने के बाद) क्या वहां कोई और है?

अपना उदहारण लिखें:

टिप्पणियाँ -

क. विश्वास की वास्तविकता।

१. कई बार विश्वास करना कठिन हो जाता है। विश्वास का अभिप्राय यह होता है कि हर एक चीज़ हमारे नियन्त्रण में नहीं रहेगी। विश्वास का तात्पर्य यह है कि हम सारी बातों को नहीं समझते हैं और हम सारे कामों को भी नहीं कर सकते हैं। यदि हम सारी चीज़ों को नियन्त्रित कर सकते, समझ सकते, और सारे काम कर सकते तो हमें विश्वास की आवश्यकता नहीं होती।

२. लेकिन, ऐसा नहीं है, हमें विश्वास की आवश्यकता पड़ती है। फिर भी, कई बार विश्वास का मार्ग उत्तम मार्ग नहीं जान पड़ता। वरन कई बार यह मार्ग मूर्खतापूर्ण दिखाई पड़ता है। विश्वास का जीवन सरल नहीं, लेकिन विश्वास बिना जीवन असम्भव है।

ख. विश्वास के लिए एक आवश्यकता।

१. इसीलिए, हमें विश्वास के विषय का अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमें इसे और इसके अभिप्रायों को समझने की आवश्यकता है।

२. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, हमें विश्वास का जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित होने की आवश्यकता है।

II. विश्वास के सन्दर्भ में एक बाइबल अध्ययन।

क. विश्वास का स्वभाव।

१. विश्वास परमेश्वर का एक वरदान है (इफि. २:८)।

२. विश्वास आत्मा का एक फल है (गला. ५:२२)

३. विश्वास आत्मा का एक वरदान है (१ कुरि. १२:९)।

४. विश्वास परमेश्वर का कार्य है (यूह.६:२९)।

५. विश्वास हृदय से उत्पन्न होता है (रोमियों १०:९,१०)।

६. विश्वास कल के लिए आशा की जाने वाली चीज़ों के लिए आज विश्वास करता है (इब्रानियों ११:१)।

ख. विश्वास का वर्णन।

१. असीमित विश्वास (यूहन्ना ११:३९-४४)।

२. सिद्ध विश्वास (याकूब २:२२)।

३. महान विश्वास (मत्ती ८:१०)।

टिप्पणियाँ -

४. बहुमूल्य विश्वास (२ पतरस १:१)।

५. पवित्र विश्वास (यहूदा २०)।

६. विनम्र विश्वास (लूका ७:६,७)।

७. छोटा विश्वास (मत्ती ८:२६; १७:२०)।

८. गम्भीर विश्वास (१तीमु. १:५)।

९. सामान्य विश्वास (तीतु. १:४)।

१०. पारस्परिक विश्वास (रोमियों १:१२)।

११. संयुक्त विश्वास (मरकुस २:५)।

१२. विश्वास में जोखिम शामिल है (मत्ती १४:२८,२९)।

ग. भिन्न प्रकार के विश्वास।

१. उद्धार के लिए विश्वास (रोमियों १०:९,१०)।

२. अस्थाई विश्वास (लूका ८:१३)।

३. बुद्धिजीवि विश्वास (याकूब २:१९)।

४. मृतक विश्वास (याकूब २:१७,२०)।

घ. विश्वास के आधार।

१. परमेश्वर में विश्वास (यूहन्ना १४:१)।

२. मसीह में विश्वास (यूहन्ना २०:३१)।

३. मूसा की लिखी व्यवस्था पर विश्वास (यूहन्ना ५:४६)।

४. भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों पर विश्वास (प्रेरितों २६:२७)।

५. सुसमाचार में विश्वास (मरकुस १:१५)।

६. परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास (रोमियों ४:२१)।

टिप्पणियाँ -

ङ. विश्वास के स्रोत।

१. बाइबल से विश्वास (यूहन्ना २०:३०,३१)।

२. प्रचार से विश्वास (यूहन्ना १७:२०)।

३. सुसमाचार से विश्वास (प्रेरितों १५:७)।

च. मसीही जीवन में विश्वास का उपयोग।

१. विश्वास के द्वारा जीवन व्यतीत करने के लिए (रोमियों १०:१४)।

२. प्रार्थना करने के लिए (मत्ती २१:२२)।

३. एक हथियार (१ थिस्लु ५:८; १ तीमु १:१८,१९; ६:१२ इब्रानियों १०:१२)।

४. बुराई का सामना करने के लिए (बुराई का विरोध करने के लिये) (इफिसियों ६:१६)।

५. संसार पर जय पाने के लिए (१ यूह २:१३-१७; ५:४)।

६. विश्वास में मरने के लिए (इब्रानियों ११:१३)।

छ. विश्वास का परिणाम।

१. पापों की क्षमा (प्रेरितों १०:४३)।

२. धर्मी ठहराया जाना (प्रेरितों १३:३९)।

३. न्याय से आज़ादी (यूहन्ना ३:१८)।

४. आत्मिक मृत्यु से आज़ादी (यूहन्ना ११:२५,२६)।

५. उद्धार के लिए (मरकुस १६:१६)।

६. अनन्त जीवन के लिए (यूहन्ना ३:१५,१६)।

७. आत्मिक ज्योति (यूहन्ना १२:३६,४६)।

८. आत्मिक जीवन (यूहन्ना २०:३१)।

९. शुद्धिकरण (प्रेरितों १५:९)।

टिप्पणियाँ -

१०. स्वीकार किया जाना (यूहन्ना १:१२)।

११. परमेश्वर तक पहुंच (इफिसियों ३:१२)।

१२. मीरास (प्रेरितों २६:१८)।

१३. शान्ति और विश्राम (रोमियों ५:१)।

१४. सफलता (२ इतिहास २०:२०)।

ज. विश्वास को लेकर आत्मिक आज्ञाएं।

१. विश्वास में दृढ़ बनें (१ कुरि. १६:१३; कुलु. १:२३)।

२. विश्वास को थामें रहें (प्रेरितों १४:२२; १ तीमु. १:१९)।

३. विश्वास में मज़बूत बनें (रोमियों ४:२०-२४)।

४. विश्वास में पाये जाएं (२ कुरि. ८:७)।

५. अधिक विश्वास के लिए प्रार्थना करें (लूका १७:५)।

झ. विश्वास का महत्व।

१. जो कुछ विश्वास से नहीं है वह पाप है (रोमियों १४:२३)।

२. विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है (इब्रानियों ११:६)।

३. विश्वास का एक मायना है (गलातियों ५:६)।

४. विश्वास प्रार्थना करने के लिए आवश्यक है (याकूब १:६)।

ञ. विश्वास में बाधाएं।

१. मत्ती १५:२३; लूका ५:१८,१९

२. मरकुस ५:३५; यूहन्ना ९:२४

ट. विश्वास की परख।

१. विलम्ब होता है (यूहन्ना ११:३-६)।

टिप्पणियाँ -

२. ऐसी मांगें जिन्हें समझना कठिन है (यहोशू ६:३; न्यायियों ७:७; १ राजा १७:९,१३; २ राजा ३:१६; ४:३)।

३. जॉर्ज मूलर ने कहाः "परमेश्वर अपने बच्चों के विश्वास को बढ़ाना चाहते हैं। लेकिन कई बार उनके लोगों को ही अधिक विश्वास नहीं चाहिए होता है क्योंकि उसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। विजय मिलने से पहले परीक्षाएं और परख होती है और अन्त से पहले विलम्ब होता है। हमें इन सारी चीज़ों को परमेश्वर के हाथों से प्राप्त करने के लिए तैयार रहना चाहिए। परमेश्वर इस तरीके से हमारे विश्वास को बढ़ाते हैं। यह विश्वास के जीवन का अनुभव हैः परीक्षाएं, रूकावटें, कठिनाइयां और असफलताओं के समय। परमेश्वर इन सारी चीज़ों का विश्वास के भोजन के रूप में इस्तेमाल करते हैं।[१]

III. विश्वास का क्या, क्यों, कहां, कब, कैसे और कौन।

क. विश्वास क्या है? इब्रानियों ११:१ पढ़ें ("निश्चय" = ग्रीक भाषा में अपोस्टासिस (upostasis) होता है।

१. अपोस्टासिस का अर्थ होता है, प्रमाण, परिणाम, बुनियाद, जमानत, सम्पत्ति का अधिकार।

२. विश्वास आपकी सम्पत्ति का मालिकाना अधिकार है, जिस प्रकार से आपके ज़मीनी कागज़ात होते हैं, ठीक वैसा ही आपकी अनन्तता के सन्दर्भ में भी है (२ कुरिन्थियों ४:१८)।

३. विश्वास का अर्थ बिना किसी सन्देह के परमेश्वर पर भरोसा करना है (इब्रानियों ११:६)।

४. विश्वास का अर्थ रोमियों ८:२८ में पायी जाने वाले सत्य को जानना और उस पर भरोसा करना है। फिर, भी विश्वास जानता है कि इसकी प्रक्रिया सिद्ध नहीं हो सकती है।

क. कई बार प्रक्रिया में अनेकों ऐसी चीज़ें जुड़ी हो सकती हैं जो "अच्छी" नहीं होतीं।

ख. लेकिन उसका अन्त भला होता है।

५. विश्वास भविष्य की ओर अग्रसर होता है, लेकिन विश्वास का कार्य वर्तमान में किया जाता है।

६. विश्वास परमेश्वर की आज्ञा से उत्पन्न होना चाहिए। यह आपकी आज्ञाकारिता पर आधारित होना चाहिए। जो विश्वास परमेश्वर की आज्ञा पर आधारित नहीं होता वह अनुमान होता है।

७. विश्वास के दो पहलू होते हैं।

क. एक का संबंध बुद्धि से होता है।

ख. दूसरे पहलू का सम्बन्ध इच्छा से होता है।

विश्वास

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

चर्चा के लिए निम्नलिखित आरेख का इस्तेमाल करें।

विश्वास के दो पहलू

बुद्धि		इच्छा
बौद्धिक निश्चय कि यीशु ही प्रभु है		यीशु को प्रभु मानते हुए
मेरा परमेश्वर	(यूह.२०:२८)	मेरा प्रभु

८. विश्वास आत्मविश्वास और आशा का जोड़ है, क्योंकि विश्वास वर्तमान और भविष्य का जोड़ है।

क. वर्तमान में आत्मिक विश्वास।

ख. भविष्य में आशा।

चर्चा विषय

चर्चा के लिए निम्नलिखित आरेख का इस्तेमाल करें।

विश्वास इब्र.११:१

निश्चय — वर्तमान — आत्मविश्वास

जिन बातों की आशा है — भविष्य — आशा

विश्वास = आत्मविश्वास + आशा

९. विश्वास के द्वारा निम्नलिखित कार्य होते हैंः

क. दिमाग परमेश्वर पर भरोसा रखता है।

ख. हृदय परमेश्वर के प्रेम को प्रतिउत्तर देता है।

टिप्पणियाँ -

ग. इच्छा परमेश्वर की आज्ञाओं के अधीन हो जाती है।

घ. परमेश्वर की सेवा में आत्मा कहना मानती है।

१०. विश्वास एक विरोधाभासी होता है; यह किसी कारण से परे जाता है।

क. विश्वास बिना "क्यों" समझे ही मान लेता है।

ख. विश्वास कैदखाने में होने पर भी गीत गाता है (प्रेरितों १६:२५)।

ग. विश्वास क्लेशों में भी आनन्दित होता है (रोमियों ५:३)।

घ. विश्वास गलत व्यवहार को भी सह लेता है (इब्रानियों ११:२५)।

ङ. विश्वास हर चीज़ को परमेश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर लेता है (फिलि. १:१२)।

११. विश्वास एक धारणा है। विश्वास उस चीज़ को मान लेना है जो अभी तक प्रगट में सामने नहीं आयी है ("अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण" इब्रानियों ११:१, २ कुरिन्थियों ४:१८)।

१२. विश्वास पाप का विपरीत हैः

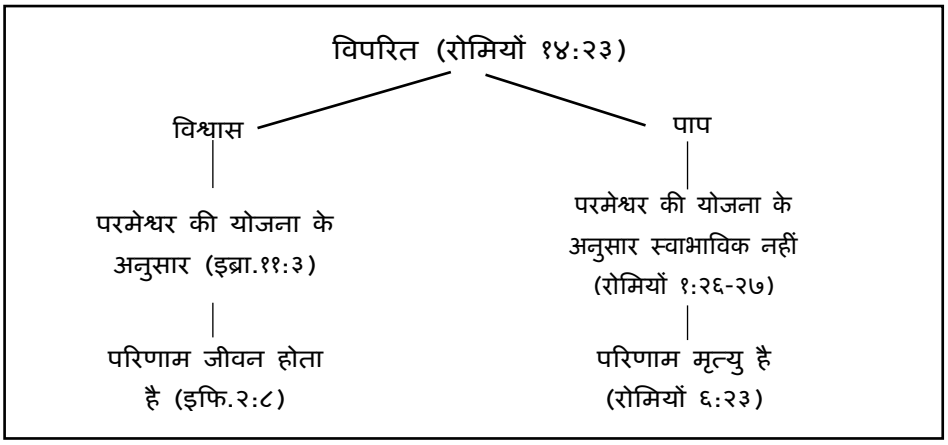

अपना उदहारण लिखें:

टिप्पणियाँ -

ख. विश्वास क्यों महत्वपूर्ण है?

१. मसीही जीवन आत्मिक युद्ध से भरा जीवन है। यह एक आत्मिक लड़ाई से भरा जीवन है। इसीलिए परमेश्वर के सारे आत्मिक हथियारों की जरूरत है। अतः उनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, "इन सबके बाद में, विश्वास की ढाल ले लो" (इफि. ६:१६)

२. बिना विश्वास के उद्धार असम्भव है (यूहन्ना ३:३६)।

३. बिना विश्वास के संसार पर जय पाना असम्भव है (१ यूहन्ना ५:४)।

४. बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है (इब्रानियों ११:६)।

५. बिना विश्वास के प्रार्थना करना असम्भव है (याकूब १:६)।

६. बिना विश्वास के परमेश्वर के साथ मेल करना असम्भव है (रोमियों ५:१)।

७. बिना विश्वास के आनन्द का होना असम्भव है (१ पतरस १:८)।

८. विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरना (गलातियों २:१६)।

९. हम विश्वास के अनुसार जीते हैं (गलातियों २:२०)।

१०. हमें धार्मिकता विश्वास से मिलती है (रोमियों १०:१-४)।

११. विश्वास के द्वारा ही मसीह हम में वास करते हैं (इफिसियों ३:१७)।

१२. विश्वास के द्वारा ही हम पवित्र आत्मा पाते हैं (गलातियों ३:२)।

१३. जो कुछ विश्वास से नहीं है वह पाप है (रोमियों १४:२३)।

ग. हमारा विश्वास कहां से आता है?

१. हमारा विश्वास परमेश्वर पर है (यह कोई धारणा, कोई कारण, कोई अभियान, या कोई अनुभव, या एक मनुष्य नहीं है)। हमारा विश्वास परमेश्वर पर है (यूहन्ना ११:२६; गला. २:१६; कुलु २:५)।

२. इसके अलावा इस पाठ्यक्रम के भाग II में दिये "विश्वास के आधारों" का भी पुनरावलोकन करें।

टिप्पणियाँ -

घ. विश्वास कब प्रगट होना चाहिए?

१. हमें हर समय और हर बात में विश्वास की आवश्यकता होती है।

२. इसके अर्थ पर ध्यान दें नीति ३:५,६ और रोमियों १४:२३।

ङ. विश्वास किस तरह से कार्य करता है?

१. यूहन्ना ११:२१-२२ में तीन प्रकार के विश्वास हैं। से तीन प्रकार के विश्वास सीमित विश्वास, बुनियादी विश्वास और समीमित विश्वास हैं।

क. मार्था के पास सीमित विश्वास था (यूहन्ना ११:२१) लाज़र की मृत्यु होते ही मार्था का विश्वास खत्म हो गया था। उसे विश्वास था कि यीशु लाज़र को ठीक कर सकते हैं, लेकिन उसे इस बात का विश्वास नहीं था कि वह उसे मृतकों में से जीवित कर सकते हैं।

१) सीमित विश्वास, यीशु की सामर्थ्य को सीमित कर सकते हैं (मत्ती १३:५८)।

२) सीमित विश्वास परिस्थितियों के द्वारा नियन्त्रित होता है।

३) सीमित विश्वास, असफलता के द्वारा प्रेरित होता है।

ख. मार्था में बुनियादी विश्वास था (यूहन्ना ११:२३-२७) उसने मसीह को लेकर अपनी समझ के अनुसार वाक्य बोला, लेकिन इस बौद्धिक ज्ञान का परिणाम वह विश्वास हुआ जो सीमित था (मरकुस १०:२७ को देखें)। इस सीमित विश्वास को देखकर यीशु रोए।

१) मसीह को लेकर बौद्धिक ज्ञान का होना बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है।

२) विश्वास को मसीह से सम्बन्धित हमारे बौद्धिक ज्ञान से आगे बढ़ना है।

ग. मार्था ने बात में असीमित विश्वास दिखाया (यूहन्ना ११:३९-४४) अन्त में, मार्था को पत्थर को हटाने की अनुमति दी। उसमें असीमित विश्वास था।

१) दुनिया कहती है, "विश्वास करने के लिए देखना ज़रूरी है।"

२) विश्वास कहता है, "देखने के लिए विश्वास करना ज़रूरी है।"

३) प्रमाण से पहले विश्वास आता है।

टिप्पणियाँ —

२. विश्वास, आज्ञाकारिता पर आधारित होना चाहिए (मत्ती १४:२८-३२)।

क. विश्वास परमेश्वर के वचनों पर आधारित होना चाहिए।

ख. पतरस पानी पर नहीं चला। वह परमेश्वर के वचनों पर चला। पद २९ में, यीशु ने पतरस से आने के लिए कहा, "आ" (रोमियों १०:१७ को देखें)।

ग. विश्वास और अनुमान अलग अलग चीज़ें हैं।

चर्चा विषय

चर्चा के लिए निम्नलिखित आरेख का इस्तेमाल करें।

परिस्थिति	आधार	प्रतिउत्तर
विश्वास	परमेश्वर की ओर से प्रकाशन	आज्ञाकारिता
अनुमान	किसी और का उदाहरण	सीमाएं

घ. अतः, हम यह नहीं कहते हैं, कि, "अब मैं पानी पर चलूंगा। मैं भी पतरस के समान विश्वास करूंगा।" हम सभी को परमेश्वर से अपना निजी प्रकाशन प्राप्त करना चाहिए। कोई भी जन किसी दूसरे व्यक्ति के विश्वास पर नहीं चल सकता है। हमारा विश्वास सीधे तौर पर परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों से जुड़ा होना चाहिए। लेकिन, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि बाइबल की बहुत सी हर काल के मसीहियों पर लागू होती है।

ङ. जब हम अपने दृष्टि यीशु से हटाकर अन्य चीज़ों पर लगाना प्रारम्भ कर देते हैं तो (उदाहरण के तौर पर आंधी और तूफान पर), तब हम डूबने लगते हैं। संदेह का परिणाम भय होता है। हमें अपनी आंखें यीशु पर लगाए रखनी चाहिए (इब्रानियों १२:२)।

च. यदि हम में विश्वास की कमी है तो, हमें यीशु को पुकारने की ज़रूरत है (मत्ती १४:३० ख)।

छ. यीशु हमें विश्वास में चलने का दूसरा अवसर प्रदान करते हैं। मत्ती १४:३२ का अभिप्राय यह है कि पतरस नाव तक जाने के लिए एक बार फिर से पानी पर चला।

टिप्पणियाँ -

ज. हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि विश्वास परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध के साथ प्रारम्भ होता है। उस रिश्ते के अन्तर्गत ही परमेश्वर हमें व्यक्तिगत प्रकाशन या निर्देशित वचन देते हैं। विश्वास से हमें उन निर्देशों का पालन करना चाहिए।

३. हम अपने विश्वास का निर्माण कर सकते हैं।

क. हम प्रार्थना और उपवास के साथ हमारे विश्वास को बना सकते हैं (मत्ती १७:२०, २१)।

ख. हम बाइबल को पढ़ने और सुनने के द्वारा अपने विश्वास का निर्माण कर सकते है (रोमियों १०:१७)।

४. परमेश्वर के श्रेष्ठता और उसकी प्रतिज्ञाओं का अध्ययन करके, उसे समझकर, स्वीकार करके और उसे मान कर हम अपने विश्वास को मज़बूत बना सकते हैं।

क. हमें यह विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर इन कामों को कर सकते हैं (उसकी श्रेष्ठता)।

ख. हमें यह विश्वास करना चाहिए कि इस काम को करना चाहते हैं (उसकी प्रतिज्ञाओं)।

च. विश्वास के लोग कौन हैं?

१. इब्रानियों अध्याय ११ को पढ़ें और उस पर मनन करें। विश्वास के लोगों और उनके कामों पर ध्यान केन्द्रित करो।

२. विश्वास के लोगों के उदाहरण की सूची निम्नलिखित हैः

पुराना नियम	नया नियम
उत्पत्ति २२:८	प्रेरितों. २७:२५
यहोशू १४:१२	मत्ती ८:५-१०
१ शमूएल १४:६	मरकुस ५:२५-३४
१ शमूएल १७:३७	प्रेरितों. ६:८
२ इतिहास २०:१२	मत्ती ९:२८
अय्यूब १९:२५	मत्ती १५:२८
दानि ३:१७	मरकुस १०:४६-५२

विश्वास

टिप्पणियाँ —

IV. उद्धार और शुद्धिकरण के सम्बन्ध में विश्वास।

क. परमेश्वर विश्वास के स्रोत हैं।

१. परमेश्वर विश्वास देते हैं।

२. मनुष्य विश्वास प्राप्त करता है (इफि २:८-१०;फिलिप्पियों १:२९)।

३. अतः,परमेश्वर ही उद्धार के प्रारम्भ हैं।

ख. विश्वास के चार पहलू।

१. ज्ञान यह समझने के लिए दिया गया है कि यीशु के द्वारा उद्धार है (रोमियों १०:१७)। ज्ञान बुनियाद या आधार है, लेकिन केवल उतना ही पर्याप्त नहीं है (याकूब २:१९)।

२. स्वीकृत करने का अर्थ सुसमाचार की विषय वस्तु के साथ तथा अपने जीवन के लिए सुसमाचार की ज़रूरत को लेकर सहमत होना है।

३. भरोसे का अर्थ, परमेश्वर पर भरोसा और उसी पर निर्भर करना है। इसमें आपके अहम और आपके भरोसे के आधार में बदलाव की ज़रूरत शामिल है (गलातियों २:२०)।

४. आज्ञाकारिता विश्वास का परिणाम है। यह सच्चे विश्वास का प्रगटीकरण है।

टिप्पणियाँ -

ग. विश्वास और कार्य।

१. विश्वास के दो पहलू होते हैं।

चर्चा विषय

चर्चा के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें।

विश्वास के दो पहलू

बुद्धि		इच्छा
सैद्धांतिक		अभ्यास
सिद्धांत		कार्य
धारणा		आज्ञाकारिता
विश्वास	(मर. १:१५)	पश्चाताप
भरोसा		कार्य

उद्धार और शुद्धिकरण
(याकूब २:१४-२६)

२. विश्वास और कार्य साथ साथ चलते हैं।

लेखक का उदारहणः

एक घर में आग लगी है। एक छोटी लड़की दूसरे माले पर है जो बच नहीं सकती है। एक लम्बा चौड़ा व्यक्ति चिल्लाता है, "कूदो... मैं तुम्हें पकड़ लूंगा।" विश्वास का एक भाग यह है कि वह लड़की यह जानती है कि वहां पर एक आदमी खड़ा है। और विश्वास का दूसरा हिस्सा यह है कि उस लड़की को मालूम है कि वह व्यक्ति शक्तिशाली है और वह उसे सम्भाल सकता है। फिर भी, विश्वास का सार यह है कि वह लड़की अन्त में कूद जाती है।"

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

३. विश्वास और कार्यों को अलग नहीं किया जा सकता।

लेखक का उदारहणः

वे सूर्य की तपिश और उसकी ज्योति के समान हैं। उसके कार्य उसकी किरणें हैं। सच्चा विश्वास कार्य उत्पन्न करता है। जीवित विश्वास कार्यों को उत्पन्न करता है। सूर्य से किरणें निकलती हैं। जिस दिन सूर्य से किरण निकलनी बन्द हो जाएगी उस दिन सूर्य खत्म हो जाएगा। (याकूब २:२६)।

अपना उदाहरण लिखें:

४. एक व्यक्ति कहता हैः "मेरे पास बिना कार्य के विश्वास है।" वह उस व्यक्ति के समान है जो नींव का निर्माण करता है, लेकिन कभी अपने घर को नहीं बनाता।

५. एक आदमी कहता हैः "मैं बिना विश्वास के काम करता हूं।" वह उसक मनुष्य के समान है जिसने अपने घर को किस मज़बूत स्थान पर नहीं बनाया है (देखें मत्ती ७:२४-२७)। घर में कोई अच्छी या सुरक्षित बुनियाद नहीं है।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदारहणः

बौद्धिक ज्ञान तथा आज्ञा मानकर किया जाने वाला कार्य नमक के दो रासायनिक अवयवों के समान हैं। नमक दो रसायनों अर्थात सोडियेम और क्लोराइड से मिलकर बना होता है। सोडियम और क्लोराइड दोनों ही जहरीले पदार्थ होते हैं। सोडियम आदमी को खत्म कर देगा। और क्लोराइड भी आदमी को खत्म कर देगा। लेकिन, जब दोनों को मिश्रित कर दिया जाता है तो वे जीवन और स्वाद को उत्पन्न करते हैं। ठीक ऐसा ही विश्वास और कार्य के साथ में भी है। एक दूसरे के बिना जहर के समान है, लेकिन दोनों मिलकर जीवन को उत्पन्न करते हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

घ. विश्वास का चरमोत्कार्ष मसीह के साथ संयोग है।

१. सच्चा विश्वास मसीह में होना है (इफिसियों १:३;२ कुरिन्थियों ५:१७)।

२. इसके अलावा, मसीह का हम में होना (गला २:२०)।

३. हम मसीह में और मसीह हम में है (इफि १:२२,२३; ४:१२,१३; यूहन्ना १५:४,५)।

४. ये विचार आत्मिक विचार हैं, जिन्हें विश्वास के द्वारा समझा जा सकता है।

V. विश्वास के हमारे अध्ययन का निष्कर्ष।

क. विश्वास के दस मुख्य सिद्धान्त।

१. मसीह जन विश्वास के द्वारा छुटकारा पाता है (प्रेरितों १६:३१) और विश्वास के द्वारा सुरक्षित रहता है (१ पत १:५)।

२. मसीही विश्वास के द्वारा जीवित रहता है (गलातियों २:२०)।

टिप्पणियाँ -

३. विश्वास को बहुत तरीकों और बहुत बार परखा जाएगा (१ पत १:७)।

४. विश्वास धीरजवन्त है, वह जानता है कि किस प्रकार परमेश्वर की प्रतीक्षा करनी है (यशायाह ४०:३१)।

५. विश्वास सदैव विजयी होता है (१ यूहन्ना ५:४)।

६. कई समयों पर, विश्वास "सामान्य चीज़ों के विरूद्ध" कार्य करता है (मत्ती १७:१४-२१)।

७. विश्वास कभी हार नहीं मानता (इब्रा ११:३२-३९)।

८. विश्वास चीज़ों को आसान नहीं बनाता है, लेकिन यह चीज़ों को आसान बनाता है।

९. विश्वास कहता है, "परमेश्वर मेरे जीवन में अपनी सिद्ध इच्छा को पूरा कर रहे हैं। इसलिए मैं सह सकता हूं। मैं दुःख उठा सकता हूं।"

१०. परिचय में, हम ने कहा था कि विश्वास करना कठिन है। फिर भी याद रखेंः परमेश्वर के लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं है।

ख. हमें अपने बीते अनुभवों को विश्वास के जीवन व्यतीत करने में बाधा डालने की इज़ाजत नहीं देनी चाहिए।

लेखक का उदारहणः

एक हाथी किसी छोटे से खूंटे में बंधा हुआ था। वह हाथी चाहता तो बिना किसी दिक्कत के खूंटी उखाड़कर बहुत आसानी भाग सकता था। लेकिन, जब वह हाथी छोटा था तब उसने भागने का प्रयास किया था, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली थी। इसलिए उस हाथी के मन में यह बात बैठ गयी कि वह कभी इससे बच नहीं सकता। होने दें कि आपके बीते काल के अनुभव आपको विश्वास का जीवन जीने से कभी न रोक पाएं।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

विश्वासः अंतिम टिप्पणियाँ

[१]माइकल पी.ग्रीन, एडए., इलस्ट्रेशन फौर बिबलीकल प्रीचिंग (ग्रैंड रैपिड्स, एम आईः बेकर बुक हाउस, १९८९), पृष्ठ १३४, १३५।